शनिवार, 9 जुलाई 2016

लोकमत समाचार

शिक्षण संस्थाओं का गिरता स्वास्थ्य

गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

अब यह बात स्थापित हो चुकी है कि आर्थिक मोर्चे पर प्रगति के लिए कुशल मानव पूंजी अनिवार्य रूप से आवश्यक शर्त है. पर जब हम यह सोचते हैं कि यह कुशल या कौशलयुक्त मानव पूंजी कहां से आएगी तो हमारा ध्यान देश की शिक्षण संस्थाओं की ओर जाता है. उनकी स्थिति को देख कर निराशा ही हाथ लगती है. इन संस्थाओं का दिन-प्रतिदिन बिगड़ता और गिरता स्वास्थ्य सभी के लिए चिंता का कारण बन रहा है.

आज शिक्षा के क्षेत्र में देश की स्थिति बड़े नाजुक दौर में पहुंच रही है. शिक्षा के अवसर अभी भी सीमित हैं. विद्यालयों, महाविद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय स्तर के प्रौद्योगिकी संस्थानों तक में अध्यापकों की कमी एक गंभीर समस्या बन गई है. बिहार में हुए परीक्षा घोटाले ने सरकार द्वारा नियंत्रित परीक्षा व्यवस्था में जिस बड़े पैमाने पर संबंधित प्रशासन द्वारा प्रायोजित धांधली को उजागर किया है उससे वहां संपन्न हुई पूरी परीक्षा की विश्वसनीयता ही आज संदिग्ध हो उठी है. इस भीषण शैक्षिक दुर्घटना को देख सुन कर आज पूरा देश स्तब्ध और हतप्रभ है. शिक्षा के साथ यह क्रूर मजाक कब से चल रहा होगा और समाज में अब तक कितना घुन लग चुका होगा इसकी आज कल्पना भी नहीं की जा सकती. यह तो स्पष्ट है कि अकादमिक परीक्षा में अंक और वास्तविक बौद्धिक योग्यता के बीच का रिश्ता खंडित हो रहा है पर इससे ज्यादा विचार की बात यह है कि जैसे-तैसे अधिकाधिक अंक पाने की होड़ क्यों बढ़ रही है. अपने बच्चों को अच्छा इंजीनियर, अच्छा डॉक्टर या अधिकारी बनाने का सपना पाल रहे माता-पिता जिस शॉर्ट कट वाले नुस्खे को आजमा रहे हैं वह समाज को किस गर्त में ले जा रहा है इसका अनुमान उन्हें नहीं है. यह एक खतरनाक स्थिति है जिस पर काबू पाना जरूरी है.

शिक्षा का एक चित्र दूसरे छोर पर हमारे सामने आता है जिसमें केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई) की परीक्षा में छात्रों को मिलने वाले अत्यंत उच्च अंकों की भरमार ने महाविद्यालयों में प्रवेश पाने के इच्छुक छात्रों के बीच बढ़ती हुई घमासान प्रतिस्पर्धा खड़ी कर दी है. यह एक दूसरे ही तरह की चुनौती पेश कर रही है. अब 95 प्रतिशत अंक पाने वाले छात्रों को भी यह भरोसा नहीं है कि उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय के किसी महाविद्यालय में मनोवांछित पाठ्यक्रम में दाखिला मिल ही जाएगा. तमाम तनावों से जूझती शिक्षा आज कराह रही है.